HW

दोहे

२. क टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय।

Ans भाव यह है कि प्रेम का बंधन अत्यंत नाजुक होता है। इसमें खटास आने पर मन की मलिनता कहीं न कहीं बनी ही रह जाती है। प्रेम का यह बंधन टूटने पर सरलता से नहीं जुड़ता है। यदि जुड़ता भी है, तो उसमें गाँठ पड़ जाती है।

ख सुनि अठिलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहैं कोय।

Ans जब हम सहानुभूति प्राप्त करने की आशा से अपना दुख दूसरों को सुनाते हैं तो लोग सहानुभूति दर्शाने और मदद करने के अलावा हमारा मजाक उड़ाते हैं। अतः दूसरों को अपना दुख नहीं बताना चाहिए।

ग रहिमन मूलहिं सींचिबो, फूलै फलै अघाय।

Ans किसी पेड़ से फूल पाने के लिए उसके पत्तों पे नहीं जड़ों पे पानी डालने से ही वह हरा-भरा होता है और उसमें फूल उगते हैं। इसी तरह एक समय में एक ही काम करना उचित है।

घ दीरघ दोहा के अरथ के, आखर थोरे आहिं।

Ans वस्तु का आकार नहीं निहित अर्थ महत्वपूर्ण होता है। दोहों में कम शब्दों में गूढ़ अर्थ समेटे रहता है।

ङ. नाद रीझि तन देत मृग, नर धन हेत समेत।

Ans प्रसन्न होने पर मनुष्य ही नहीं पशु भी अपने तन दे देते हैं। परंतु मनुष्य बड़े पशु होते हैं और अपना सब कुछ दे देते हैं।

च जहाँ काम आवै सुई, कहा करै तरवारि।

Ans जो काम एक छोटे वस्तु से हो सकता है, वहाँ बड़े और भयंकर वस्तु लाने की आवश्यकता नहीं है।

छ पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुष, चून।

Ans मनुष्य का पानी बचाना चाहिए। पानी जाने पर मोती साधारण पत्थर बन जाते हैं, मनुष्य को अपमानित-सा महसूस होता है, आटे से रोटियाँ नहीं बन बन पाएगी।

3.क जिस पर विपदा पड़ती है वही इस देश में आता है।

Ans जा पर विपदा पड़त है, सो आवत यह देस।

ख कोई लाख कोशिश करे पर बिगड़ी बात फिर बन नहीं सकती।

Ans बिगरी बात बने नहीं, लाख करौ किन कोय।

ग पानी के बिना सब सूना है, अतः पानी अवश्य रखना चाहिए।

Ans रहिमन पानी राखिए, बिनु पानी सब सून।